

गागरोन की चीखती दीवारें (1444 ई.): भयानक जौहर और दूसरे साके की अनकही दास्तान

इतिहास प्रायः केवल विजेताओं के आख्यानोँ और अत्यधिक चर्चित महासंग्रामों को ही याद रखता है। जब भी राजस्थान के शौर्य और बलिदान की बात आती है, तो चित्तौड़गढ़ के साके या गागरोन के पहले साके (1423 ई. - अचलदास खींची) का ज़िक्र प्रमुखता से होता है।

लेकिन 1444 ई. में हुआ गागरोन का दूसरा महा-संग्राम और साका एक ऐसी घटना है, जो अपनी भीषणता, रणनीतिक दबाव और खौफनाक आत्म-बलिदान के मामले में अद्वितीय थी—फिर भी इतिहास के पन्नों में कहीं दबकर रह गई। © 3rd Aug. 2026 Govind Malviya (REAL HI STORY)

1. पृष्ठभूमि और महमूद खिलजी का जुनून

1423 ई. में मालवा के सुल्तान हुशंगशाह ने गागरोन पर आक्रमण किया था, जिसमें अचलदास खींची वीरगति को प्राप्त हुए। परंतु इसके कुछ ही समय बाद खींची राजपूतों ने पुनः संगठित होकर अपने पैतृक गागरोन दुर्ग पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया।

1444 ई. (विक्रम संवत् 1500) में मालवा (मांडू) के सुल्तान **महमूद शाह खिलजी प्रथम** ने एक विशाल सेना, आधुनिक तोपखाने और अनगिनत युद्ध-हाथियों के साथ गागरोन पर चढ़ाई कर दी। महमूद खिलजी के लिए गागरोन केवल एक भू-भाग नहीं था; वह किसी भी कीमत पर इस अजेय जलदुर्ग को जीतकर वहाँ अपना वर्चस्व स्थापित करना चाहता था।

उस समय गागरोन के शासक अचलदास खींची के वीर पुत्र **रावत पलणसी (पाल्हणसिंह)** थे, और उनके साथ उनके पराक्रमी चाचा **धीरपदे (धीरज सिंह)** दुर्ग की रक्षा का कमान संभाल रहे थे। मेवाड़ के महाराणा कुंभा ने भी पलणसी की सहायता के लिए एक सैन्य टुकड़ी भेजी थी, परंतु खिलजी की विशाल सेना के आगे वह कुमुक अपर्याप्त साबित हुई।

© 3rd Aug. 2026 Govind Malviya (REAL HI STORY)

2. आहू और कालीसिंध नदियों की घेराबंदी

गागरोन दुर्ग भारत के प्रसिद्ध जलदुर्गों (औदक दुर्ग) में गिना जाता है, जो तीन ओर से आहू और कालीसिंध नदियों के संगम से घिरा हुआ है।

सुल्तान खिलजी के सैन्य इंजीनियरों ने दुर्ग की भौगोलिक स्थिति को देखते हुए एक क्रूर रणनीति अपनाई। उसने नदियों के जलमार्गों और आपूर्ति रास्तों की सख्त घेराबंदी कर दी। महीनों चली इस घेराबंदी के कारण किले के भीतर अनाज (रसद), पीने के पानी और बारूद का घोर संकट पैदा हो गया। जब दुर्ग के भीतर संसाधन समाप्त हो गए और बाहर से मदद की तमाम उम्मीदें टूट गईं, तब रावत पलणसी और खींची सरदारों ने आत्मसमर्पण के स्थान पर 'महा-साका' करने का अंतिम निर्णय लिया। © 3rd Aug. 2026 Govind Malviya (REAL HI STORY)

3. जौहर और 'कटार' का दारुण दृश्य

राजपूत युद्ध-परंपरा में 'साका' दो चरणों में होता था—पहला स्त्रियों का जौहर और दूसरा पुरुषों का केसरिया (अंतिम मृत्यु-युद्ध)।

गागरोन के भीतरी प्रांगण में विशाल जौहर कुंड प्रज्वलित किया गया। लेकिन यहाँ परिस्थिति अत्यंत भयावह हो चुकी थी। सुल्तान की सेना दुर्ग की बाहरी प्राचीरों को तोड़ने में सफल होने लगी और अंदर घुसने के बेहद करीब पहुँच गई।

तारीख-ए-फरिश्ता और स्थानीय ख्यातों के अनुसार, जब राजपूत सरदारों को लगा कि शत्रु सेना बहुत करीब आ चुकी है और जौहर की अग्नि को पूरी तरह प्रचंड होने का समय नहीं मिल पा रहा है, तो एक अप्रत्याशित संकट खड़ा हो गया। शत्रु के हाथों अपनी कुल-वधुओं और बालकों के अनादर को रोकने के लिए कई राजपूत सरदारों ने अत्यंत भारी मन से स्वयं अपने ही हाथों से अपनी स्त्रियों और बच्चों को कटार व तलवार से वीरगति दी और तत्पश्चात उनके अवशेषों को पवित्र अग्नि में समर्पित किया।

यह मध्यकालीन भारत के युद्ध-इतिहास के सबसे दारुण, रूह कंपा देने वाले और भयावह दृश्यों में से एक था।

4. पलणसी का अंतिम केसरिया और 'मुस्तफाबाद'

जब पीछे मोह और चिंता का कोई बंधन न रहा, तब रावत पलणसी और धीरपदे ने अपने मस्तक पर जौहर की भस्म लगाई, केसरिया बाना पहना और दुर्ग के मुख्य द्वार खोल दिए।

राजपूत योद्धा महाकाल की भांति खिलजी के अग्रिम दस्ते और हाथियों पर टूट पड़े। रावत पलणसी ने अभूतपूर्व शौर्य का प्रदर्शन करते हुए सैकड़ों तुर्क सैनिकों को मौत के घाट उतारा और अंततः रणभूमि में लड़ते हुए वीरगति पाई।

विजय के उपरांत सुल्तान महमूद खिलजी ने इस दुर्ग का नाम बदलकर 'मुस्तफाबाद' रख दिया, वहाँ एक टकसाल (Mint) स्थापित की और मुख्य द्वार पर एक मस्जिद का निर्माण करवाया।

❧ प्रामाणिक ऐतिहासिक संदर्भ (Primary Authentic Sources)

- तारीख-ए-फ़रिश्ता – मोहम्मद कासिम फ़रिश्ता (Vol. IV, pp. 209–212)
- तारीख-ए-महमूदशाही – समकालीन फ़ारसी पांडुलिपि (Folios 158a–162b)
- Gazetteer of the Jhalawar State – Major H.B. Abbott (pp. 12–15)
- गागरोन का इतिहास एवं खींची राजवंश – डॉ. रघुवीर सिंह (सीतामऊ) (pp. 58–66)
- वीर विनोद – कविराजा श्यामलदास (भाग-1, pp. 324–327)
- उदयपुर राज्य का इतिहास – डॉ. जी. एच. ओझा (भाग-1, pp. 282–285)

The Screaming Walls of Gagron (1444 AD): The Terrifying Jauhar and the Untold Story of the Second Saka

History often favors the narratives of victors and widely popularized sieges. Whenever the valor and supreme sacrifices of Rajasthan are mentioned, the Sakas of Chittorgarh or the First Saka of Gagron (1423 AD under Achaldas Khichi) dominate the discourse.

However, the **Second Great Battle and Saka of Gagron in 1444 AD** remains an unparalleled chapter in terms of its sheer brutality, tragic circumstances, and extreme self-sacrifice—yet it remains largely buried in the forgotten pages of history. © 3rd Aug. 2026 Govind Malviya (REAL HI STORY)

1. Background and Sultan Mahmud Khilji's Campaign

In 1423 AD, Sultan Hoshang Shah of Malwa captured Gagron Fort after the legendary martyrdom of Rawat Achaldas Khichi. However, shortly thereafter, the Khichi Rajputs regrouped and successfully reclaimed their ancestral Jal-Durg (Water Fort).

By 1444 AD (Vikram Samvat 1500), **Sultan Mahmud Shah Khilji I** of Mandu (Malwa) launched a massive invasion targeting Gagron with heavy artillery, infantry, and war elephants. For Khilji, conquering Gagron was not merely about territorial expansion; he was determined to permanently subdue this invincible water fortress.

At the time, Gagron was defended by **Rawat Palansi (Palhan Singh)**, the heroic son of Achaldas Khichi, alongside his uncle **Dhirpade (Dhiraj Singh)**. Maharana Kumbha of Mewar dispatched a military contingent to assist Palansi, but against Khilji's vast force, the external aid proved insufficient.

2. Siege of the Ahu and Kalisindh Rivers

Gagron Fort is celebrated as one of India's finest **Jal-Durgs (Water Forts)**, strategically surrounded on three sides by the confluence of the **Ahu and Kalisindh rivers**.

Exploiting the fort's geography, Khilji's military engineers blockaded the river routes and supply lines. As the siege dragged on over months, acute shortages of food grains, drinking water, and ammunition paralyzed the defenders inside. Realizing that survival inside the fort was impossible and surrender was unpardonable, Rawat Palansi and the Khichi chiefs resolved to perform the ultimate rite—**The Maha-Saka**.

© 3rd Aug. 2026 Govind Malviya (REAL HI STORY)

3. The Jauhar and the Tragic Dagger Scene

In Rajput tradition, a 'Saka' occurred in two sequential phases: **Jauhar** (self-immolation by women and children) followed by **Kesariya** (the final battle to the death by male warriors).

A massive Jauhar pyre was lit in the inner courtyard of the fort. However, the situation grew desperate as Khilji's forces managed to breach the outer ramparts.

According to *Tarikh-i-Firishta* and local bardic chronicles, as enemy troops closed in, the Jauhar fire could not reach full strength in time. Fearing that their women and children might fall alive into enemy hands, several Rajput chiefs took the agonizing step of personally slaying their own family members with daggers and swords before committing their remains to the sacred flames. This remains one of the most chilling and tragic moments in medieval siege warfare.

4. Palansi's Final Charge & Renaming to 'Mustafabad'

With all worldly attachments severed, Rawat Palansi and Dhirpade anointed their foreheads with the sacred Jauhar ash, donned saffron robes (Kesariya), and threw open the massive gates of Gagron.

The Rajput warriors charged into the vanguard of Khilji's army with fierce desperation. Rawat Palansi displayed extraordinary valor, cutting down hundreds of enemy soldiers before attaining martyrdom on the battlefield.

Following his victory, Sultan Mahmud Khilji renamed Gagron Fort to '**Mustafabad**', established a mint inside, and constructed a mosque near the main entrance.

Authentic Historical References

- **Tarikh-i-Firishta** – Ferishta / Tr. John Briggs (Vol. IV, pp. 209–212)
- **Tarikh-i-Mahmud Shahi** – Contemporary Persian Manuscript (Folios 158a–162b)
- **Gazetteer of the Jhalawar State** – Major H.B. Abbott (pp. 12–15)
- **History of Gagron and Khichi Dynasty** – Dr. Raghubir Singh (Sitamau) (pp. 58–66)
- **Veer Vinod** – Kaviraja Shyamaldas (Vol. 1, pp. 324–327)
- **History of Mewar/Udaipur** – Dr. G. H. Ojha (Vol. 1, pp. 282–285)

© 3rd Aug. 2026 Govind Malviya (REAL HI STORY)